मनोज
कॉमिक्स
मूल्य 7.00
ARJUN N VARUN PRESENT
राम-रहीम
और
खूनी दरिन्दे
RAJ COMICS FAN NATION
BRINGING HOME THE KINGDOM
RAJ COMICS FAN NATION
CHAVAN STUDIO
Arjun N Varun Presents
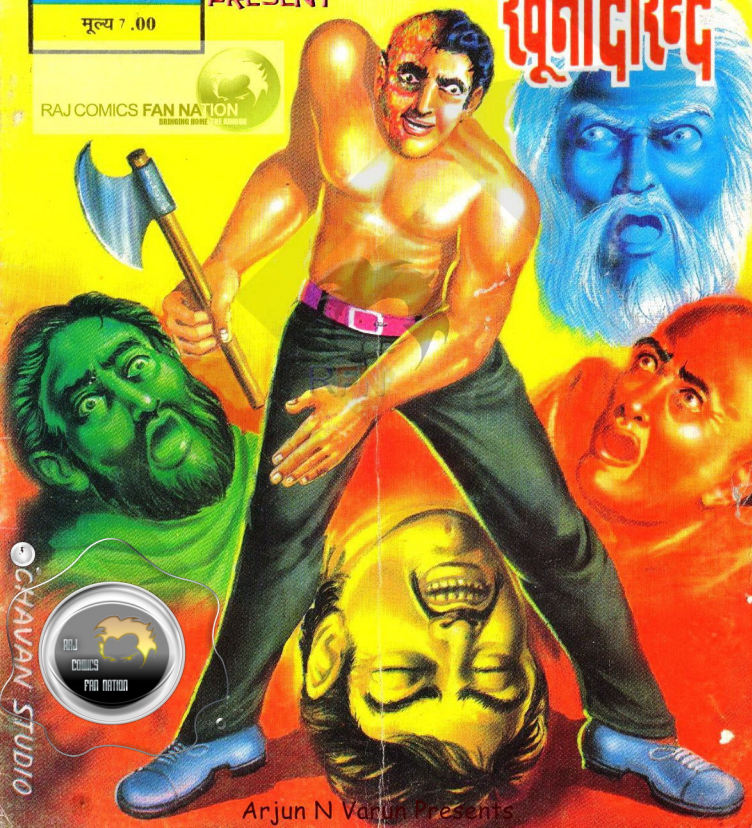
राम-रहीम और खूनी दरिंदे

डबल सीक्रेट एजेण्ट 00½ राम-रहीम

● लेखक - बिमल चटर्जी.

● चित्रांकन- त्रिशूल कॉमिक्स आर्ट.

लिफाफे से पत्र निकालकर राम उसे पढ़ने लगा।

राम-रहीम को काले बच्चों का नमस्कार!
प्रिय भाइयो, हमें तुम्हारी सहायता की बहुत जरूरत है। काले द्वीप की गोरी सरकार हम पर भयंकर जुल्म कर रही है। गोरे सैनिक कालों की नस्ल को खत्म करने के लिए हम बच्चों का खून बहा रहे हैं। अगर यही हाल रहा तो काले द्वीप से काले बच्चों का नामो-निशान मिट जायेगा। तुम दोनों बहादुर हो, जांबाज हो, खतरों से खेलना तुम्हारी आदत है। अतः हमारी तुमसे प्रार्थना है कि तुम यहां आओ और हमारी रक्षा करो। किसी कारणवश हम अपना पता पत्र में नहीं दे रहे हैं। लेकिन तुम्हारे यहां पहुंचने पर हम स्वयं तुमसे संबंध स्थापित कर लेंगे।

तुम्हारे भाई
काले बच्चे.

उनके सुपर सूट की विशेषता यह थी कि वह देखने पर तो फैंसी सूट लगता था, लेकिन उस सूट में आगे व सीने पर जो बटन लगे थे, वे शक्तिशाली दस्ती बम थे।

आस्तीन पर लगे बटन धुएं के बम थे...

... कालर और कंधे पर जो बटन लगे थे, वे आग लगाने वाले विस्फोटक बम थे।

एयरपोर्ट की इमारत के भीतर प्रविष्ट होकर राम-रहीम ने अपना सामान चैक करवाया...

...और लगभग एक घण्टे पश्चात् वे जहाज पर बैठकर लन्दन के लिये रवाना हो गये।

लन्दन से काले द्वीप पहुंचने के लिये उन्होंने पानी के जहाज को चुना।
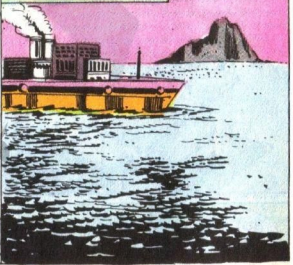
जहाज कई दिनों तक एक लम्बा सफर तय करता हुआ काले द्वीप के बन्दरगाह पर पहुंचा।

जहाज से उतरकर जैसे ही वे आगे बढ़े—
ओह! यहां तो बहुत जबरदस्त चैकिंग हो रही है।
हां, लेकिन हमारी तलाशी में उन्हें सिर्फ साधारण चीजों और कपड़ों के अलावा और कुछ नहीं मिलेगा।

कुछ देर बाद उन दोनों की बारी आई।
ऐ, खड़े-खड़े मुंह क्या देख रहे हो? बैग का सामान बाहर निकालो।

राम-रहीम ने अपने-अपने बैग उनके सामने खाली कर दिये।

देख लीजिए श्रीमान्! इसमें कोई आपत्तिजनक सामग्री नहीं है।

तब सैनिकों ने उनके वस्त्रों की तलाशी ली।

इनकी जेबों में कोई गलत वस्तु नहीं है सर!

हुम्म!

ठीक है। तुम लोग अपना सामान समेटो और जाओ।

जी, धन्यवाद!

राम-रहीम अपना-अपना सामान बैगों में भरने लगे।

अरे, यह इनके कोट के बटन आकार में इतने बड़े और इतने अधिक क्यों हैं?

फिर राम-रहीम जैसे ही वहां से चलने को हुये—

ऐ ठहरो, मैं तुम्हारे कोट के बटनों को चैक करना चाहता हूं।

मारे गये। कम्बख्त को आखिर संदेह हो ही गया।

राम ने रहीम को आंखों ही आंखों में कोई इशारा किया और फिर जैसे ही वह सैनिक अधिकारी उनके निकट पहुंचा—

रहीम! अटैक!

ओ नो!

धड़ाक्

भाग कहां रहे हो तुम लोग। पोजीशन लो और भूनकर रख दो दोनों छोकरों को।
अपने ऑफिसर की आवाज सुनकर सैनिक संभले और उन्होंने पोजीशन लेकर उस तरफ फायरिंग शुरू कर दी, जिधर राम-रहीम आड़ ले चुके थे।
शाबाश बहादुरो, बचकर न जाने पायें दोनों।
तड़...तड़...तड़...
ठ..ठ..ठ..

हम रिवॉल्वर से इनका मुकाबला नहीं कर सकते। बटनबम इस्तेमाल करने पड़ेंगे।
ठीक है। तुम इन लोगों का ध्यान बंटाओ, मैं बटन बम तोड़ता हूं।

जल्दी करो!
लो, बस तोड़ लिये।
धांय-धांय

और फिर रहीम ने उन बटनों में से एक बटन सैनिकों की ओर उछाल दिया।

अगले ही पल -
धड़ाम

अब हमें यहां से फूट लेना चाहिए, वरना हम घिर जायेंगे।
ठीक कहते हो, लेकिन फूटने से पहले एक-एक गन उठा लेते हैं। रास्ते में काम आयेंगी।

दोनों ने मरे हुए सैनिकों की दो गनें उठाईं और पूरी शक्ति से बाहर की ओर दौड़ पड़े।

बाहर सैनिकों की गाड़ियां खड़ी थीं। राम-रहीम ने उनमें से एक जीप पर कब्जा कर लिया।
रहीम, आज देखना है तुम्हारी ड्राइविंग का कमाल।
घर्र...र्र...र्र
ऐसी बात है तो फिर देखो मेरा कमाल।

अगले ही पल रहीम ने जीप को तूफानी रफ्तार से सड़क पर दौड़ा दिया।
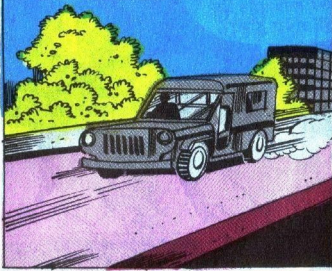
राम भइया, तुम पीछे का ख्याल रखना। सैनिक हमारा पीछा जरूर करेंगे।
तुम चिन्ता मत करो। मैं उन्हें संभाल लूंगा।

रहीम का ख्याल ठीक निकला। जल्दी ही एक जीप उनके पीछे लग गई।
रहीम, जरा स्पीड कम करो, ताकि मैं भी उन्हें अपना कमाल दिखा सकूं।

जीप की स्पीड कम होते ही राम ने पीछे आ रही जीप पर फायरिंग कर दी।
तड़...तड़...तड़
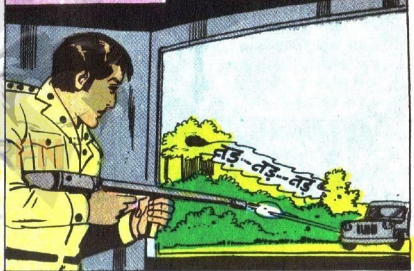
गोलियों ने जीप के अगले टायरों को छलनी कर दिया।
अ...रे... जीप संभालो...!

लेकिन ड्राइवर जीप संभाल न सका और—
आ...ई!
आ... ह...!
उफ...!
वो मारा!

फिर लगभग चार किलोमीटर की दूरी तय करने के पश्चात्-
रहीम, जीप रोको!
क्यों?

यह सैनिक जीप है। हमें फंसवा सकती है। इसलिए अब हमारा इसका साथ छोड़ देना ही उचित होगा।
ओह!

दोनों ने जीप छोड़ दी और पैदल ही एक कच्चे रास्ते से आगे बढ़ने लगे।
काले द्वीप तो हम पहुंच गये। अब उन बच्चों से किस तरह मिला जाए, जिन्होंने हमें पत्र भेजा था।
दुनिया गोल है प्यारे! कहीं न कहीं वह हमें मिल ही जायेंगे।

इधर शहर की एक खस्ता इमारत में मोंगा जेम्स नाम का एक लड़का अपने साथियों को बता रहा था-
साथियो, खबर मिली है कि हमारे मददगार राम-रहीम यहां पहुंच चुके हैं।
याहू!
हुर्रे!
हुर्रे!

लेकिन तुम्हें कैसे पता चला कि राम-रहीम यहां पहुंच चुके हैं?
बन्दरगाह पर मौजूद हमारे एक साथी ने उन्हें बहुत से गोरे सैनिकों को मार कर जीप से फरार होते हुए अपनी आंखों से देखा है।

तभी-
दोस्तो, गोरे सैनिकों ने जान बस्ट बस्ती पर हमला कर दिया है।

अब क्या किया जाए?
घबराने से काम नहीं चलेगा साथियों। हमें हिम्मत से काम लेना होगा। फिर अब तो हमारे मदद-गार राम-रहीम भी यहां आ चुके हैं।
फिर तो हमें तुरन्त उनसे मुलाकात करनी चाहिए।
उनसे भी मुलाकात कर लेंगे। पहले हमें गोरे सैनिकों के हमले से जान बर्स्ट बस्ती को बचाना होगा, वरना बहुत से बच्चे अपने प्राणों से हाथ धो बैठेंगे।

मोंगा जेम्स अपने साथियों के साथ जान बर्स्ट बस्ती की ओर चल पड़ा।

रास्ते में-
साथियो, अपने-अपने थैलों में ईंट-पत्थर भर लो। गुलेलों से सैनिकों पर हमला करने में काम आयेंगे।
ठीक है।

उधर जान बर्स्ट बस्ती में-
बस्ती-वालो, अपने बच्चों को चुपचाप हमारे हवाले कर दो, वरना हम पूरी बस्ती को जलाकर राख कर देंगे।

लेकिन जब बस्ती-वालों ने उनके आदेश का पालन नहीं किया-
हुम्म! तो यह लोग इस तरह नहीं मानेंगे।
सैनिको, घरों के दरवाजे तोड़कर बच्चों को बाहर खींच लाओ।

फिर क्या था।

धड़ाक्

धड़ाक्

बचाओऽऽऽ!

हाय! अब क्या होगा?

दरवाजे तोड़कर सैनिक घरों के अन्दर पहुंच गये।

बोल, कहां हैं तेरे बच्चे?

आह, नहीं बताऊंगी।

नहीं बताएगी तो ले।

धड़ाक्

आह!

औरत को घायल करके सैनिक बच्चों की तलाश करने लगे।

शीघ्र ही—

ओह! तो यहां छुपा रखा हैं कम्बख्त ने अपने बच्चों को।

???

फिर वे सैनिक बच्चों को खींचते हुए बाहर ले आये।

छोड़ दो मुझे।

हमें मत मारो।

कम्बख्त इतने-इतने-से हैं, लेकिन बड़ी जान हैं इनके शरीरों में।

कोई बात नहीं। अब इनके शरीरों में जरा भी जान नहीं रहेगी।

बांध दो तीनों को यहां।
ठीक है।
शाबाश! हर घर की अच्छी तरह तलाशी लेना। कोई बच्चा छूटने न पाये।
कोई नहीं छूटेगा सर!
थोड़ी ही देर में मैदान बच्चों से भर गया।
हा-हा-हा! अब आएगा मजा।
बस्ती-वालो, अब ध्यान से अपने बच्चों की मौत का नजारा देखो।
नहीं-नहीं, हमारे बच्चों को मत मारो।
चाहो तो हमारी जानें ले लो।
हा-हा-हा!
तुम्हारी जान लेकर हमें क्या फायदा होगा बूढ़े खूसट? आज नहीं तो कल, तुम लोग अपने आप ही मर जाओगे। मारना तो हमें इन संपोलों को है, जो जवान होकर कभी भी हमारी हुकूमत के खिलाफ बगावत का झण्डा बुलन्द कर सकते हैं।

फायर!
आदेश मिलते ही खूनी-दरिन्दे सैनिकों ने मासूम बच्चों पर गोलियां बरसानी शुरू कर दीं—
हा-हा-हा! हम तुम कालों की नस्ल को आगे नहीं बढ़ने देंगे।
तड़-तड़-तड़
तड़-तड़-तड़
आह!
हाय!
उफ!
उधर—
अरे, यह फायरिंग की आवाज कैसी?
आस-पास कहीं गोलियां चल रही हैं, लेकिन क्यों? इसका जवाब मैं भी नहीं दे सकता।
आ... ई... ई... ई
गोलियों के साथ चीखें भी सुनाई दे रही हैं। राम भइया, लगता है आस-पास की किसी बस्ती में कत्ले-आम हो रहा है।
हो सकता है। आओ चलकर देखते हैं।
दोनों भागते हुये जान बस्ट बस्ती के पास पहुंच गये—
उफ! कितनी बेरहमी से मार रहे हैं सैनिक बच्चों को।
रहीम, हमें इस कत्ल-ए-आम को रोकना ही होगा। जल्दी से अपनी गन सम्भाल लो।
तड़-तड़-तड़
और फिर—
अब यह लोग किसी बच्चे को नहीं मार पायेंगे।
तड़-तड़-तड़
तड़-तड़-तड़

आह!
हाय!
उफ!
राम - रहीम द्वारा किये गये इस अचानक हमले से सैनिकों में भगदड़ मच गई।
भागो!
उफ! पता नहीं किसने हम पर हमला बोल दिया है, लेकिन ये हमलावर काले बच्चे हरगिज नहीं हो सकते।
शाबाश रहीम, एक भी सैनिक यहां से बचकर नहीं जाना चाहिये
नहीं जाएगा राम भइया। मैं एक भी दरिन्दे को जीवित नहीं छोड़ूंगा।
तड़-तड़-तड़
ठ्रेट-ठ्रेट-ठ्रेट
सैनिकों को भागते देख इधर-उधर छुपे मोवा जेम्स और उसके साथी हरकत में आ गये।
मारो!
मार डालो!
इन्हें बता दो कि हम काले हैं तो क्या हुआ, हिम्मत वाले हैं।
पत्थरों की मार से सैनिक बुरी तरह बौखला गये।
खटाक
आ...ई...ई...
खटाक
उफ!
हाय! यह नई आफत कहां से आ गई? पहले गोलियों की, अब पत्थरों की वर्षा।

लगता है, हमें चारों तरफ से घेर लिया गया है।
हां, किसी भी तरफ से भागने का रास्ता नहीं मिल रहा है।
तभी दो बटन बम सैनिकों के करीब आकर फटे...
धड़ाम
धड़ाम
...और काफी सैनिक मारे गये।
जो बच्चे मरने से बच गये थे, उनके मां-बाप उनकी ओर दौड़ पड़े -
मेरा बच्चा!
मेरा लाल!
मेरे बुढ़ापे का सहारा!
उधर राम-रहीम व मोंगा जेम्स और उसके साथी भी आमने-सामने आ गये।
यदि मैं भूल नहीं कर रहा तो तुम्हीं भारत मां के लाल राम-रहीम हो।
बिल्कुल ठीक समझे, लेकिन तुम्हारी तारीफ!
मेरा नाम मोंगा जेम्स है और ये मेरे साथी हैं।
मुझे उम्मीद थी दोस्तो कि मेरा पत्र मिलते ही तुम दोनों जरूर आओगे।

अच्छा, तो वह तुम हो जिसने हमें पत्र भेजा था।
हां।

अब चिन्ता की कोई बात नहीं है मोंगा जेम्स। हम आ गये हैं। अब गोरे सैनिक तुम लोगों पर और जुल्म नहीं कर पायेंगे।
हां, हम उनके जुल्म का जवाब जुल्म से देंगे।

इसीलिये तो मैंने तुम दोनों को यहां बुलाया है। तुम लोग बहादुर हो। दुश्मन को ईंट की जगह पत्थर से जवाब देना जानते हो।

तभी बस्ती के लोग उनका आभार प्रकट करने के लिये उनके पास आ पहुंचे-
बच्चो, हम तुम सबके आभारी हैं, तुमने कम से कम कुछ बच्चों को तो मरने से बचा लिया।
लेकिन हमें दुःख है कि हम तमाम बच्चों को नहीं बचा सके। आप लोग मृतकों का अंतिम संस्कार करें और अब हमें जाने की आज्ञा दें।

और मोंगा जेम्स उनसे भावभीनी विदा लेकर राम-रहीम को अपने अड्डे पर ले आया।
हमें कोई ऐसी तरकीब सोचनी होगी, जिससे गोरी सरकार तुम लोगों पर जुल्म करना बन्द कर दे।
और तुम लोगों को भी वही सब सहूलियतें व अधिकार मिलें, जो गोरों के बच्चों को मिलते हैं।

अगर ऐसा हो जाये तो हमारी जिन्दगी ही संवर जाएगी। तब हम भी गोरे बच्चों की तरह पढ़-लिखकर समान अधिकार से जी सकेंगे और अपने देश को प्रगति की ओर ले जाने की कोशिश कर सकेंगे।
धैर्य रखो मित्र! एक दिन ऐसा ही होगा।

उधर —
मेरी समझ में नहीं आता कि आप लोग क्या कह रहे हैं। दो लड़कों ने बन्दरगाह और बस्ती में हमारे ढेरों सैनिक मार डाले और आप सब लोग हाथ पर हाथ रखे बैठे हैं।
सर! वे दोनों साधारण लड़के नहीं हैं। उनका नाम राम-रहीम है और वे भारत-वासी हैं। कम्बख्त, दोनों ही लोमड़ी की तरह चालाक और चीते की तरह फुर्तीले हैं।
और सर, मुझे पूरा विश्वास है कि वे काले लड़कों का साथ देने ही यहां आये हैं।

मैंने उनका नाम और काम नहीं पूछा है। मैं यह जानना चाहता हूं कि वह दोनों कब गिरफ्तार किये जायेंगे और समूचे द्वीप से काले बच्चों का सर कब तक कुचला जायेगा। मैं पूरी तरह से काली नस्ल का सफाया चाहता हूं।

सर, हम पूरी कोशिश कर रहे हैं। हमारे सैनिक उन दोनों को चप्पे-चप्पे पर तलाश कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि वे जल्द ही पकड़े जायेंगे। फिर उनके साथ ही यहां के काले बच्चों से भी निपट लिया जायेगा।
सिर्फ कोशिश से काम नहीं चलेगा। उन्हें फौरन गिरफ्तार करना पड़ेगा, वरना वह दोनों यहां तबाही मचा देंगे।

सर! अगर इजाजत हो तो राम-रहीम को गिरफ्तार करने की मैं एक तरकीब बताऊं?
इजाजत है कैप्टन!

अगर हम कालों के नेता लूशा जेम्स के बच्चों को अपने कब्जे में ले लें और कालों पर जोर डालें तो वह लोग अपने नेता के बच्चों को बचाने के लिये राम-रहीम को अवश्य हमारे हवाले कर देंगे।

गुड आइडिया! तुम फौरन इस योजना पर काम शुरू कर दो।
थैंक्यू सर!

कैप्टन ने तुरन्त अपनी योजना पर अमल किया और—
यही है लूथा जेम्स का घर। चारों ओर से इसे घेर लो।

मकान के इर्द-गिर्द घेरा डलवाने के पश्चात् कैप्टन कुछ सैनिकों के साथ लूथा जेम्स के घर में प्रविष्ट हुआ—
कहां हैं तुम्हारा मालिक लूथा जेम्स और उसके बच्चे?
वे घर पर नहीं हैं और यह भी हमें नहीं मालूम कि वे कहां...

धांय
आई... ई... ई...

अब बताओ, कहां हैं तुम्हारा मालिक और उसके बच्चे?
ब... बताता हूं...बताता हूं। हमें मत मारिये।

मालिक तो कई दिनों से जमीं-दोज हैं, लेकिन उनके बच्चे नीचे तहखाने में हैं।
ठीक है! हमें तहखाने तक ले चलो।

नौकर उन्हें एक कमरे के नीचे बने तहखाने तक ले गया।
ये रहे मालिक के तीनों बच्चे।
गुड! पकड़ लो इन्हें और ले चलो।

और उसी शाम—
हर काला व्यक्ति ध्यान से सुने। तुम्हारे नेता लूथा जेम्स के बच्चे इस समय हमारे कब्जे में हैं। अगर तुम लोग अपने नेता के बच्चों को बचाना चाहते हो तो राम-रहीम नाम के लड़कों को सरकार के हवाले कर दो, वरना चौबीस घण्टों के बाद तुम्हारे नेता के तीनों बच्चों को शहर के सबसे बड़े चौराहे पर गोलियों से भून दिया जायेगा।
???

यह एलान सुनकर मोंगा जेम्स भागता हुआ अड्डे पर पहुंचा—
गजब हो गया मित्रो, गोरी सरकार ने तुम दोनों को पकड़ने के लिये बहुत भयंकर चाल चली है।
ओह! क्या चाल चली है उन्होंने?
क्या!

तब मोंगा जेम्स ने राम-रहीम को पूरी बात बता दी। सबकुछ सुनकर—
इसमें घबराने की कोई बात नहीं है मित्र! हम नहले का जवाब दहले से देंगे।
हां, यहां की गोरी सरकार की चाल हम उसी पर उलट देंगे।
लेकिन यह सब होगा कैसे?
सब हो जायेगा। बस तुम इतना बताओ कि इस जगह की तरह कोई और स्थान भी है तुम्हारे पास।
हां, पास ही के जंगल में एक गुफा है। कभी-कभी हम उसका इस्तेमाल भी कर लेते हैं।
तो चलो इसी समय हमें वह गुफा दिखा दो।
राम-रहीम ने उसी समय जंगल में जाकर वह गुफा देखी—
ठीक है। इससे हमारा काम चल जायेगा, लेकिन तुम कल सुबह यहां खाने-पीने का ढेर सारा सामान पहुंचा देना और यहीं हमारा इंतजार करना।
ठीक है।
दूसरे दिन सुबह—
गोरे बच्चों के स्कूल की बस ठीक आधे घण्टे पश्चात् इसी सड़क से होकर गुजरेगी।
हां, मोंगा जेम्स ने यही बताया था। आओ पत्थरों से इसे ब्लॉक कर देते हैं।
और राम-रहीम इधर-उधर से बड़े-बड़े पत्थर उठाकर सड़क को अवरुद्ध करने लगे।
बहुत हो गये रहीम। अब आओ, झाड़ियों में छिप जाते हैं।
बस, यह पत्थर और रख दूं।
उसके बाद दोनों निकटवर्ती झाड़ियों में जाकर छिप गये।
थोड़ी देर बाद—
घर्र-र्र-र्र
सावधान रहीम। बस आ रही है।
मैं देख रहा हूं।

सड़क पर पड़े पत्थरों के कारण बस आगे न बढ़ सकी।
पता नहीं किस बदमाश ने यह पत्थर डाले हैं।
आओ, चलकर हटाते हैं।
पता नहीं लोगों को इस तरह की मूर्खता करके क्या मिलता है?
तभी—
खबरदार! हिलना मत। चुपचाप हाथ ऊपर उठा लो, वरना भूनकर रख दूंगा।
ओह! खतरा!
क्या चाहते हो?
बच्चों का अपहरण।
लेकिन स्कूली बच्चों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है। जो तुम इनका अपहरण करना चाहते हो।
बूशा जेम्स के बच्चों ने भी किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा था। फिर भी तुम्हारी सरकार ने उनको गिरफ्तार कर लिया। सिर्फ इसलिये कि उनकी आड़ लेकर तुम्हारी सरकार हमें पकड़ना चाहती है।
ओह! तो तुम उन दोनों हिन्दुस्तानियों में से एक हो, जिन्होंने यहां दो दिन में ही हंगामा बरपा कर दिया है।
तुम बिल्कुल ठीक समझे।
तभी—
जल्दी आओ राम, अगर कोई गाड़ी इधर आ निकली तो सब गड़बड़ हो जायेगी।
आ रहा हूं।

सुनो, मैं तुम दोनों को बेहोश करके यहीं छोड़ दूंगा। जब होश आये तो सीधे अपने जनरल के पास जाना और उससे कहना, अगर शाम होने से पहले उसने सूशा जेम्स के बच्चों को नहीं छोड़ा तो हम बस में सवार बच्चों को मारना शुरू कर देंगे और लाशें उस तक भेजते रहेंगे।

तुम बच्चों को मत मारना।

हम जनरल तक तुम्हारा मैसेज अवश्य पहुंचा देंगे।

गुड!

अगले पल—

उफ!

आह!

फिर राम ने दोनों को बेहोश किया...

...और बस के भीतर पहुंच गया।

रहीम, जल्दी गाड़ी चलाओ।

सुनो दोस्तो, यदि तुममें से किसी ने भी हमारे कार्य में विघ्न डालने की कोशिश की या शोर-शराबा किया तो मैं उसे बेहिचक गोली मार दूंगा।

मेरा नाम राम है और यह मेरा साथी रहीम है। हमने तुम लोगों का अपहरण किया है...।
राम की बात पूरी होने से पहले ही एक लड़की ने उसकी बात काट दी-
अगर तुम लोगों को रुपया चाहिये तो हम सब अपने मम्मी-डैडी से लाकर दे सकते हैं।
नहीं दोस्तो, हमने तुम्हारा अपहरण धन की खातिर नहीं किया। हम तो उन तीन बच्चों को छुड़ाना चाहते हैं, जिन्हें तुम्हारी सरकार ने जबरदस्ती गिरफ्तार कर लिया है।
फिर रहीम ने उन्हें सारी बात बता दी।
अगर ऐसी बात है तो हम तुम्हारे साथ हैं।
हां, हम तुम्हारे साथ हैं।
जब तक सरकार उन बच्चों को नहीं छोड़ती, हम सब खुशी-खुशी तुम्हारे पास रहेंगे।
उसके बाद राम मोंगा जेम्स को एक ओर ले जाकर बोला-
अपने किसी साथी को सैनिक हैडक्वार्टर की निगरानी के लिये भेज दो, ताकि जैसे ही बूथा जेम्स के बच्चों को छोड़ा जाये, हमें पता चल जाये।
ठीक है। मैं खुद ही जा रहा हूं।
उधर होश आने के बाद ड्राइवर और उसका साथी सीधे जनरल के पास पहुंचे और उसे पूरी घटना बता दी-
ओह! यह तो बहुत बुरा हुआ। यह तो मैंने सोचा ही नहीं था कि वह दोनों भी इस तरह का जवाब दे सकते हैं।

ठीक है! तुम दोनों जा सकते हो!
जी!
उनके जाते ही...
...जनरल ने ट्रांसमीटर पर कैप्टन वाग से सम्पर्क किया!
कैप्टन, राम-रहीम ने हमारी चाल के जवाब में एक स्कूली बस का अपहरण कर लिया है और धमकी दी है कि लूशा जेम्स के बच्चों को न छोड़ा गया तो स्कूल के सारे बच्चे मार दिये जायेंगे!
ओह! फिर क्या करना चाहिये सर?

तुम लूशा जेम्स के बच्चों को छोड़ दो। हम राम-रहीम को गिरफ्तार करने के लिये कोई दूसरी चाल चलेंगे!
ओ.के. सर!

कैप्टन ने लूशा जेम्स के बच्चों को छोड़ दिया!
वाह! श्रीमान् लूशा जेम्स के बच्चे छोड़ दिये गये! चलकर राम-रहीम को खबर देनी चाहिये!

अपना सामान समेटकर मींगा जेम्स भागता हुआ राम-रहीम के पास पहुंचा—
लूशा जेम्स के बच्चों को आजाद कर दिया गया है दोस्त! निःसंदेह तुम्हारी योजना जोरदार रही।
हमें मालूम था, ऐसा ही होगा। चलो, अब हम भी बच्चों को छोड़ दें।
वे तीनों बच्चों के पास पहुंचे—
दोस्तो, सरकार ने लूशा जेम्स के बच्चों को छोड़ दिया है, इसलिये हम भी तुम्हें छोड़ रहे हैं।
हुर्रे!
हुर्रे!
राम-रहीम जिन्दाबाद!

दोस्तो, बच्चे काले हों या गोरे, वह मासूम ही होते हैं। उन पर जुल्म नहीं किया जाता।
इसीलिये हमने भी तुम लोगों पर कोई जुल्म नहीं किया। तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होने दी। यहां तक कि तुम्हारे खाने-पीने तक का भी पूरा ख्याल रखा...
...इसलिये हम चाहते हैं कि यह सब बातें तुम लोग अपने-अपने मम्मी-डैडी और अपनी सरकार से कहना, ताकि वह लोग भी काले बच्चों पर जुल्म ढाना बन्द कर दें।
हम जरूर कहेंगे।
हम अपनी सरकार को मजबूर करेंगे कि वह काले बच्चों पर जुल्म करना और उन्हें मारना बन्द कर दे।
काले बच्चों को भी हमारी तरह जीने का हक दिया जाये।
हां-हां, हम उन्हें यह हक जरूर दिलवायेंगे।
शुक्रिया दोस्तो!
और फिर रात के अंधेरे में राम-रहीम ने बच्चों को उस जगह छोड़ दिया, जहां से शहर की सीमा आरम्भ होती थी।
इससे आगे हम तुम्हारे साथ नहीं जा सकते। यहां से तुम लोगों को अकेले ही जाना होगा। चले जाओगे न?
हां, चले जाएंगे।
चले जाएंगे।
दूसरे दिन जनरल ने राम-रहीम को पकड़ने के लिये एक नई चाल चली। इस चाल के तहत सैनिकों ने एक बस्ती पर हमला करके कुछ बच्चों को पकड़ लिया।
बस्तीवालो, हम इन बच्चों को ले जा रहे हैं। बारह बजे दिन में इन सबको गोल चौराहे के पास वाले मैदान में गोलियों से भून दिया जायेगा। राम-रहीम से कहना, अगर इन्हें बचा सकते हैं तो आकर बचा लें।

उसके बाद—
जल्दी चढ़।
अब देखता हूं राम-रहीम कैसे बचते हैं।

बच्चों को लेकर ट्रक वहां से रवाना हो गया।
मुझे फौरन यह खबर राम-रहीम तक पहुंचानी चाहिये।

वह लड़का अड्डे पर पहुंचा—
गजब हो गया मोंगा जेम्स। सैनिक शालू की बस्ती से दस बच्चों को पकड़कर ले गये हैं।
ओह!

कैप्टन कह रहा था कि बच्चों को बारह बजे गोल चौराहे के पास वाले मैदान में गोलियों से भून दिया जायेगा। राम-रहीम बचा सकते हों तो आकर बच्चों को बचा लें।
फिर दिखा दी जनरल ने अपनी औकात।

स्पष्ट है, जनरल इस तरीके से तुम दोनों का शिकार करना चाहता है।
हमें मालूम है, फिर भी हम बच्चों को छुड़ाने वहां जायेंगे।

लेकिन तुम दोनों वहां फंस सकते हो।
कोई बात नहीं। हम अपनी खातिर बच्चों की जान खतरे में नहीं डाल सकते।
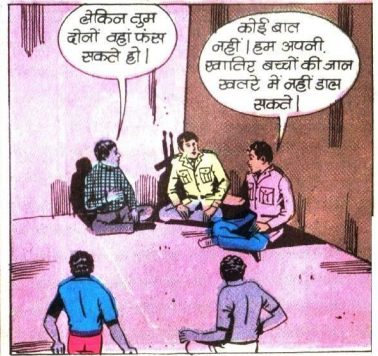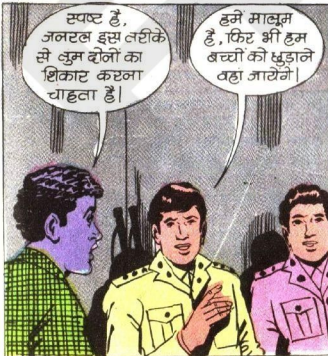
उधर गोल चौराहे पर हजारों की भीड़ जमा थी। लोग अपनी सरकार के जुल्म की इन्तहा देखने आये थे।
सावधान रहो! राम-रहीम इन बच्चों को छुड़ाने जरूर आयेंगे।
आप चिन्ता न करें सर! इस बार वह बचकर नहीं जा सकेंगे।
बारह बजने से कुछ देर पहले राम-रहीम वहां पहुंच गये।
या खुदा, काफी तगड़ा इंतजाम किया गया है हमें पकड़ने के लिये।
कुछ भी हो, हमें बच्चों को छुड़ाना है।
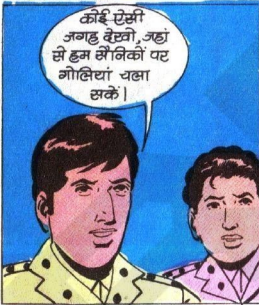
कोई ऐसी जगह देखो, जहां से हम सैनिकों पर गोलियां चला सकें।
उस ओर चला जाये। उधर से निशाना सही बैठेगा।
ठीक है। वह जगह उपयुक्त रहेगी।
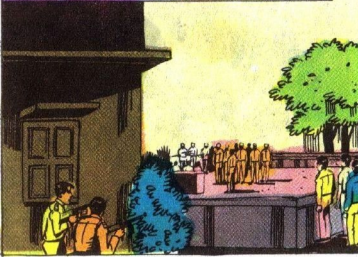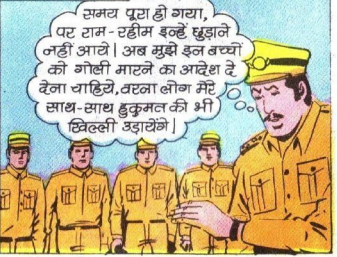
दोनों दाईं ओर एक इमारत की आड़ में जा पहुंचे—
ठीक बारह बजे—
समय पूरा हो गया, पर राम-रहीम इन्हें छुड़ाने नहीं आये। अब मुझे इन बच्चों को गोली मारने का आदेश दे देना चाहिये, वरना लोग मेरे साथ-साथ हुकूमत की भी खिल्ली उड़ायेंगे।

लेकिन इससे पहले कि वह आदेश दे पाता—
तड़-तड़-तड़
आह!

उसके बाद तो राम-रहीम ने धुआं-धार गोलियां चलानी शुरू कर दीं।
तड़-तड़-तड़
तड़-तड़-तड़

आह!
आ...ई... ई...
उफ!
मर गया!

भागो!
जरूर राम-रहीम ने ही हमला किया है!

राम ने भागते हुये सैनिकों पर दो-तीन बटन बम उछाल दिये।

बटन बम सैनिकों के बीच जाकर फटे।
धड़ाम
आ...ई...ई...ई
आह!

उसके बाद राम-रहीम ने विस्फोटक बमों के साथ-साथ धुयें के बमों का भी प्रयोग किया। वे भी बटन रूपी बम थे।
सम्भलकर, कोई बम बच्चों या जनता के ऊपर न जा गिरे।
उन छोटे किन्तु शक्तिशाली बटन बमों ने आस-पास तबाही मचा दी...
धड़ाम्
धड़ाम्
धड़ाम्
...साथ ही चारों तरफ धुआं ही धुआं छा गया।
भागो!
राम-रहीम आ गये हैं। अब वह बच्चों को छुड़ा लेंगे।
भागो!
भगदड़ और धुयें का फायदा उठाकर राम-रहीम बच्चों के पास जा पहुंचे—
मैं तुम्हारा हाथ खोल रहा हूं। हाथ खुलते ही तुम अपने साथी को आजाद करना। समझ गये!
हां!
बच्चों को आजाद कराकर राम-रहीम भागती हुई भीड़ में शामिल हो गये।
अब कोई चिन्ता नहीं है।
हां। अब सैनिक हमारी या इन बच्चों की हवा भी नहीं पा सकेंगे।
जब सारे माजरे का जनरल को पता चला तो वह अपनी पिटी हुई चाल पर आंसू बहाने लगा—
डूब मरना चाहिये हमें चुल्लू भर पानी में। इतनी कड़ी सुरक्षा के बावजूद राम-रहीम बच्चों को छुड़ाकर ले जाने में सफल हो गये।
और सर, राम-रहीम को गिरफ्तार करने के चक्कर में कम से कम हमारे पचास सैनिक मारे गये हैं।
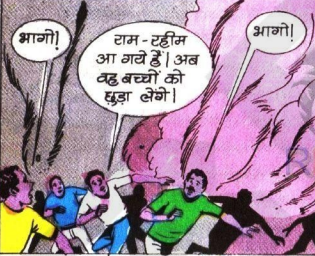
हमारे सैनिकों की कुर्बानी व्यर्थ नहीं जायेगी कर्नल! मैं उन दोनों छोकरों की बोटी-बोटी अपने शिकारी कुत्तों से नुचवा दूंगा...
...अब तुम लोग मेरी नई योजना सुनो।
फिर जनरल उन्हें अपनी योजना बताने लगा।
उधर अड्डे पर—
तुम दोनों कब तक इस तरह, हमारी रक्षा करते रहोगे मित्र!
जब तक तुम लोगों को जीने का अधिकार नहीं मिल जाता। खैर, तुम चिन्ता मत करो। इस बार हम ऐसी चाल चलेंगे कि जनरल चारों खाने चित हो जायेगा।
!!!
उसी रात—
सम्भलकर, अगर जरा-सी भी आहट हो गई तो हम गोलियों से छलनी कर दिये जायेंगे।
बिना कोई आहट किये दोनों गेट पर खड़े पहरेदार सैनिकों के पीछे पहुंच गये और अगले ही पल—
धड़ाक
खटाक
उफ!
आह!
अब आराम से टेक लगाकर खड़े रहो।
हम जरा अन्दर होकर आते हैं।

उसके बाद—
इन्हें खाते ही कुत्ते आराम की नींद सो जायेंगे और हमारा रास्ता साफ हो जायेगा।

फिर राम ने गोश्त के टुकड़े बंगले के अन्दर उछाल दिये।

बाप रे बाप, चार-चार कुत्ते मौजूद हैं।
अगर इनका इंतजाम न करते तो यह हमें फाड़कर रख देते।

कुत्तों ने जैसे ही गोश्त के उन टुकड़ों पर मुंह मारा, वे बेहोश होकर जमीन पर लुढ़क गये।

लेकिन जैसे ही राम-रहीम बंगले के अन्दर पहुंचे—
खबरदार, हिलना मत। हथियार फेंककर हाथ ऊपर उठा लो, वरना जान से हाथ धो बैठोगे।

ओह! फंस गये। इस खतरे की ओर तो ध्यान ही नहीं दिया था।

मजबूरी थी। राम-रहीम को गार्ड के आदेश का पालन करना ही पड़ा।
कौन हो तुम दोनों और पहरेदार सैनिकों के रहते बंगले के अन्दर कैसे आ गये?

मैं राम हूं। यह मेरा साथी रहीम है। हम जनरल के बच्चों का अपहरण करने आये हैं।
क्या?

उसी क्षण रहीम ने गार्ड पर हमला कर दिया।
यह गन तुम्हारे हाथ में अच्छी नहीं लगती।
खटाक्
आह!

पलके झपकते ही बाज़ी पलट गई।
अब बताओ, जनरल के बच्चे किस कमरे में सो रहे हैं?
अगर तुमने फौरन जवाब नहीं दिया तो हम तुम्हें गोली मार देंगे।

नहीं-नहीं, मुझे मत मारो। ब...बच्चे गैलरी के अंतिम कमरे में सो रहे हैं।

अगले ही पल-
धड़ाक्
आह!

गार्ड को बेहोश करके राम-रहीम बच्चों के कमरे में पहुंच गये।

खर्र-र्र-र्र-

गुड! बच्चे बहुत गहरी नींद सो रहे हैं।

शीsss... बोलो मत। दबे पांव आगे बढ़ो।

बिस्तर के पास पहुंचकर रहीम ने क्लोरोफार्म से भीगा रूमाल निकाला और बच्चों की नाक के आगे सहलाने लगा।

बस करो! बेहोश हो गये होंगे।

जनरल पत्र उठाकर पढ़ने लगा-
जनरल,
तुमने हजारों काले बच्चों पर जुल्म किये हैं। उन्हें जान से मरवा डाला है, लेकिन अब तुम्हारे बच्चों की बारी है।
तुम्हारे हितैषी
राम-रहीम
रामरहीम
पत्र पढ़कर वह बाहर की ओर भागा-
नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मेरे बच्चों को कोई नहीं मार सकता। मैं उन्हें मरने नहीं दूंगा। मैं राम-रहीम से माफी मांग लूंगा।

आधे घण्टे बाद-
मैं राम-रहीम से हाथ जोड़कर माफी मांगता हूं और प्रार्थना करता हूं कि मेरी गलतियों की सजा मेरे बच्चों को न दें। मैं वायदा करता हूं कि अब किसी काले बच्चे पर जुल्म नहीं किया जायेगा...
...काले बच्चों को भी अब वही हक दिया जायेगा, जो गोरे बच्चों को है। काले बच्चों को वह सभी सुविधायें दी जायेंगी, जो गोरों को दी जाती हैं।

जनरल का संदेश सुनकर काले लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई।
हुर्रे!
आहा! अब हम पर कोई जुल्म नहीं करेगा।
अब हम भी शान व गर्व से जी सकेंगे।
हम भी गोरे बच्चों की तरह रह सकेंगे।

उधर अड्डे पर—
हम तुम्हारा अपहरण कर लाये हैं! कहीं इसी कारण तुम दोनों हमसे नाराज तो नहीं हो।
अगर नाराज हो तो जो दिल चाहे सजा दे लो।
नहीं राम भइया! हम बिल्कुल नाराज नहीं हैं।
हमें तो खुशी होगी, अगर हमारे कारण हमारे डैडी काले बच्चों को जान से मारना व उन पर जुल्म करना बन्द कर दें।

तभी खुशी से उछलता मोंगा जेम्स वहां आ पहुंचा और राम-रहीम को जनरल का संदेश सुना दिया—
वह मारा!
शुक्र है, हम अपने मकसद में कामयाब हो गये।

मुबारक हो राम भइया!
बधाई हो रहीम भाई!

चलो, अब हम भी अपना फर्ज पूरा कर दें।
तुम्हें तुम्हारे मम्मी-डैडी तक पहुचा दें।

थोड़ी देर बाद वे जनरल के बच्चों को लेकर वहां से रवाना हो गये।

रहीम ने कार जनरल के बंगले से कुछ पहले ही रोक दी।
जाओ मित्रो, तुम्हारा घर आ गया।
तुम दोनों हमें हमेशा याद रहोगे। अच्छा, विदा।
बच्चों को उनके घर छोड़कर राम-रहीम वापस अड्डे पर आ गये।
दोस्त, तुमने हमें जिस काम के लिये बुलाया था, वह काम अब पूरा हो चुका है। इस-लिये अब हमें जाने की इजाजत दो।
हां मोंगा जेम्स, अब हम अपने वतन लौटना चाहते हैं।
दिल तो नहीं चाहता कि तुम दोनों को जाने दूं, लेकिन मैं जानता हूं कि तुम्हारा समय बहुत कीमती है। इसलिये रोकूंगा नहीं।
शुक्रिया दोस्त!
और उसी रात राम-रहीम ने कालाद्वीप छोड़ दिया। हजारों की संख्या में काले बच्चे बन्दरगाह पर उन्हें छोड़ने आये थे।
समाप्त